Social Science

Special Issue

"(Global Partnership: India's Collaboration Initiatives for Economic and Social Growth)"

सतत विकास लक्ष्यों को आकार देने में भारत की भूमिका

विनोद कुमार यादव

शोध छात्र, राजनीति विज्ञान, दमयंती राज आनंद पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, बिसौली, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence Author: विनोद कुमार यादव

सारांश

सतत विकास से तात्पर्य ऐसे विकास से है जो भावी पीढियों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान की आवश्यकताएं पूरी करें। सतत विकास के तहत ऐसे वैष्विक समाज का निर्माण पर बल देता है, जिससे सबके लिए समान न्यायसंगत, सुराक्षित, शांति पूर्ण, समृद्ध वातावरण प्राप्त हो सके। आज भारत के साथ–2 वैश्विक संदर्भों में सतत विकास हर देश की जरूरत बन चुका है। औद्योगीकरण के बाद वैश्विक पटल पर तमाम तरह की चुनौतियां आ खडी हुई है। इन चुनौतियों को आज का वैश्विक समाज नजरन्दाज नहीं कर सकता। इन्ही पहलुओं को ध्यान में रखते हुए हुए 90 के दषक में दुनिया के सभी देश के साथ–2 वैश्विक संस्थाएँ सतत विकास के संदर्भ में मंथन, चर्चा व भावी नीतियां तैयार करने पर जोर दे रही है। जिससे की वैष्विक संतुलन कायम रहे।

मूलशब्द: सतत विकास, प्रकृति, पंचवर्षीय योजनाएं, आर्थिक संबृद्वि लैंगिक समानता, जलवायु परिवर्तन, समावेशी विकास

परिचय

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र में ''सतत विकास'' को आकार देने वाले उद्देश्यों के सन्दर्भ में आने वाली समस्यायों को स्पष्ट करना तथा उन्हें प्राप्त करने के लिए किये गये प्रयासों पर प्रकाश डालना है।

सतत विकास के लक्ष्य

संयुक्त राष्ट्र के एजेंडा 2030 में कुल 17 लक्ष्यों का निर्धारण किया गया जो इस प्रकार है–

- गरीबी के सभी रूपों की पूरे विश्व से समाप्ति।
- भूख समाप्ति, खाद्य सुरक्षा और बेहतर पोषण और टिकाऊ कृषि को बढ़ावा।
- सभी उम्र के लोगों को स्वास्थ्य सुरक्षा और जीवन को बढ़ावा देना।
- समावेशी शिक्षा प्रणाली।
- लैंगिक समानता के साथ महिला सषक्तिकरण।
- सभी के लिए स्वच्छ पानी की उपलब्धता।
- सस्ती, विश्वसनीय, टिकाऊ ऊर्जा को बढ़ावा देना।
- सभी के लिए समावेशी आर्थिक विकास व रोजगार उपलब्ध कराना।
- सतत बुनियादी ढाँचा व औधोगिक विकास।
- सुरक्षित शहरी अद्योसंरचना का विकास।
- खपत व उत्पादन का समावेशीकरण।
- जलवायु परिवर्तन और उसके प्रभावों से निपटने के लिए कार्यवाई।
- स्थायी सतत विकास के लिए महासागरों, समुद्री संसाधनों का संरक्षण।
- जैव विविधता का समावेशी उपयोग व संरक्षण।
- सतत विकास के शब्दर्थ में शांतिपूर्ण और समावेशी समतियों को बढ़ावा देना।
- वैश्विक भागीदारी को बढ़ावा देना।
- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा

सतत विकास एवं भारत

वैश्विक संदर्भ में भारत आज महत्वपूर्ण भूमिका में है। विश्व के सभी बड़े मंचों के माध्यम से भारत वैश्विक समस्याओं के प्रति संवेदनशील सार्थक प्रयास पर जोर देता है। ग्लोबल वार्मिग, खाधान्न संकट, स्वास्थ्य, शिक्षा, निर्धनता, पर्यावरण, वन्यजीव संकट, प्रदूषण, ऊर्जा आपूर्ति आदि चुनौतिया विश्व के सामने मौजूद है। भारत हर सार्थक पहल पर अपनी भागीदारी सुनिष्चित करता आया है।

भारत आज विश्व का सबसे बड़ा आबादी वाला देश है। देश की जरूरतों को पूरा करते हुए सतत विकास की प्रक्रिया में आगे की ओर बढना है। भारत शुरू से ही सतत विकास के मूलभूत सिद्धांतो को अपनी विकास नीतियों शामिल करता आ रहा है। हमारी सरकार द्वारा अनेक नीतियां कार्यक्रम सतत विकास लक्ष्यों के अनुरूप है। जिनमें मेक इन इंडिया, स्वच्छ भारत अभियान, बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओं, राष्ट्रीय ग्रामीण पेयजल कार्यक्रम, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, आयुष मिशन, आवास योजना, डिजिटल इंडिया प्रोग्राम, कृषि संबधी कई योजनाएं, गरीबी निर्धनता से जुड़े कई कार्यकम, पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कई कार्यक्रम, नवीकरणीय उर्जा के क्षेत्र प्राप्त द्वारा विश्वसनीय पहल व कार्यक्रम को बढ़ावा दिया जा रहा है।

सतत विकास लक्ष्यों के साथ विकास प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के संदर्भ में भारत द्वारा हर मोर्चे पर निगरानी रखते हुए आगे बढ़ने का प्रयास कर रहा है। केन्द सरकार ने सतत विकास लक्ष्यों के कार्यान्वयन पर निगरानी रखने तथा इसके समन्वयन की जिम्मेदारी नीति आयोग को सौंपी है। सांख्यिकी कार्यान्वयन मंत्रालय राष्ट्रीय संकेतांक तैयार करता है। सांख्यिकी और कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा

संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक परिषद द्वारा प्रस्तावित संकेतको की वैश्विक सूची से उन संकेतकों की पहचान करना, जो हमारे राष्ट्रीय संकेतक ढांचे के लिए अपनाएं जा सकते हैं, वास्तव में एक मील का पत्थर है।

हमारे संघीय ढांचे में सतत विकास लक्ष्यों की संपूर्ण सफलता में राज्यों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। राज्यों में विभिन्न राज्य स्तरीय विकास योजनाएं कार्यान्वित की जा रही है। इन योजनाओं क सतत विकास लक्ष्यों के साथ तालमेल होना चाहिए। केन्द्र राज्य सरकारों को सतत विकास लक्ष्यों के कार्यान्वयन में आने वाली विभिन्न चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए मिलकर काम करने की आवश्यकता है।

सतत विकास लक्ष्यों के कार्यान्वयन को सुविधाजनक बनाने के लिए भारतीय संसद विभिन्न हित धारकों के साथ गहन विचार विमर्ष कर रही है। जैसे अध्यक्षीय शोध कदम, जो हाल ही में स्थापित किया गया एक मंच है। सतत विकास लक्ष्यों से संबंधित विभिन्न मुददों पर हमारे सांसदों द्वारा क्षेत्र के विशेषज्ञों के साथ विचार विमर्श को सुविधाजनक बनाता है। इसके अलावा नीति आयोग ने अन्य संगठनो के सहयोग से विशेष सतत विकास लक्ष्यों पर राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर पर परामर्श श्रृंखलाएं आयोजित की है ताकि विशेषज्ञों, विद्वानों, संस्थाओं सिविल सोसाइटियों, अंतराष्ट्रीय संगठनों और केन्द्रीय मंत्रालय सहित राज्यों और अन्य हितधारकों के साथ गहन विचार विमर्श किया जा सके।

जलवायु परिवर्तन लक्ष्यों की प्राप्ति में भारत की प्रगति

भारत ने वर्ष 2020 से पहले के अपने स्वैच्छिक लक्ष्य को हासिल कर लिया है। संयुक्त राष्ट्र प्रेमवर्क कन्वैशन ऑन क्लाइमेट चेंज (UNFCCC) के तहत कोई बाध्यकारी दायित्व नहीं होने के बावजूद उत्सर्जन तीव्रता को कम करने के अपने लक्ष्य की घोषणा की है। पेरिस समझौते के अनुसार भारत वर्ष 2015 में UNFCCC में अपना राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान प्रस्तुत किया, जिसमें वर्ष 2021–2030 की आबादी के लिए आठ लक्षयों की रूपरेखा को शामिल किया गया है ये है :

- अपने सकल घरेलू उत्पाद की उत्सर्जन तीव्रता को वर्ष 2005 के स्तर से वर्ष 2030 तक 35 प्रतिशत तक कम करना।
- वर्ष 2030 तक गैर जीवाष्म ईंधन आधारित ऊर्जा संसाधनों से लगभग 40 प्रतिशत संचयी विद्युत शक्ति स्थापित क्षमता प्राप्त करने के लिए हरित जलवायु कोष सहित प्रौद्योगिक के. हस्तांतरण और कम लागत वाली अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सहायता प्राप्त करना।
- वर्ष 2030 तक अतिरिक्त वन और वृक्षों के आवरण के माध्यम से 2.5 से 3 विलियन बव$_2$ के बराबर अतिरिक्त सिंक का निर्माण करना।
- अन्य लक्ष्य स्थायी जीवन शैली से संबंधित है; जलवायु के अनुकूल विकास पथ; जलवायु परिवर्तन अनुकूलन; जलवायु वित्त; प्रौद्योगिकी और क्षमता निर्माण।
- जलवायु परिवर्तन का मुकाबला करने के लिए भारत के हलिया पहल (और इस तरह सतत विकास लक्ष्य को प्राप्त करना) वर्ष 2070 तक नेट जीरो, हरित ऊर्जा संक्रमण आदि।

जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्ययोजना (NAPE)

- उपर्युक्त लक्ष्यों के अलावा, भारत सरकार जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्ययोजना को भी लागू कर रही है जो शमन और अनुकूलन सहित सभी जलवायु कार्यो के लिए एक व्यापक नीतिगत ढाँचा प्रदान करती है।
- इसमें सौर ऊर्जा के विशिष्ट क्षेत्रों में आठ मुख्य मिशन शामिल है–ऊर्जा दक्षता तर्क, स्थायी आवास, जल, हिमालयी पारिस्थतिकी तंत्र, हरित भारत, स्थायी कृषि और जलवायु परिवर्तन के लिए रणनीतिक ज्ञान।

सतत विकास के सन्दर्भ में चुनौतियां

बढ़ती आबादी तीन औद्योगीकरण, शहरीकरण के साथ – मानव शांत विधियों विभिन्न पहलुओं के आयामों में परिवर्तन हुआ है। समाज व देश की जरूरतों को पूरा करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का बेतहाशा दोहन, नदी, झील, वन, प्राकृतिक वरण में परिवर्तन के फलस्वरूप सतत विकास के समक्ष कई तरह की चुनौतियां विद्यमान है, जो इस प्रकार है।

- भारत जैसे बडी जनसंख्या वाले राष्ट्र के समक्ष निर्धनता, शिक्षा, स्वास्थ्य आज भी बडी चुनौती के रूप में विद्यमान है। कार्यशील वर्ग को रोजगार उपलब्ध हो सके इसके लिए जरूरी कदम उठाना एक चुनौती पूर्ण कदम है।
- आर्थिक संबृद्वि भी उल्लेखनीय दरों के बावजूद आधी से अधिक आबादी भूख और सुरक्षित पेयजल तथा बिजली के अभाव से पीड़ित है। इन समस्यायों को हल करने के लिए एक मिली जुली पद्धति अपनानी होगी जिसमें भोजन, जल और ऊर्जा के बीच अंतः संबध बनाना होगा।
- तीव्र शहरीकरण सौर औद्योगीकरण के कारण सार्वजनिक अवसंरचन पर दबाव पड़ता है। इसमें बुनियादी स्वास्थ्य और स्वच्छता सेवाएं भी शामिल है।

निष्कर्ष

उपरोक्त संदर्भों में सतत विकास आज हर देश की जरूरत है। जो कि साझे विन्दुओं पर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग द्वारा ही हासिल किया जा सकता है। भारत द्वारा विकास की विभिन्न नीतियों में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा निर्धारित मानकों के अनुरूप आगे बढ़ने का प्रयास करता है। जलवायु परिवर्तन, कृषि, ऊर्जा स्वास्थ आदि सभी क्षेत्रों में अंतर्राष्ट्रीय मंचो के साथ तालमेल बढ़ाने का काम कर रहा है।

भारत द्वारा सतत विकास के हर पहलु पर दीर्घकालीन नीतियों व कार्यक्रमों को शामिल करते हुए विकास की ओर बढ़ने का प्रयास कर रहा है। इस संदर्भ में भारत अल्पविकसित व गरीब देशों को विभिन्न सुविधाएं तकनीकी सहायता उपलब्ध कराने का प्रयास करता है। भारत द्वारा इस बात पर अपनी मजबूत भूमिका अदा करता है कि वैश्विक मंचो पर छोटे व गरीब विकासशील देश की आवाज को सही दिशा मिला सके। इस दिशा में भारत कई वैष्विक मंचों व क्षेत्रीय संगठनो के माध्यम से समावेशी वैश्विक समाज के निर्माण पर जोर देता रहा है।

संदर्भ

1. गुप्ता आरती. ''सतत विकास लक्ष्यों के प्रासंगिकता का मूल्यांकनः भारतीय संदर्भ में''. आर्थिक विकास और उपभोक्ता संरक्षण। 2018;12(2):45-62.
2. शर्मा मनीष. ''सतत विकास लक्ष्यों की दिशा में भारत की राजनीति का मूल्यांकन''. भारतीय राजनीति और विदेशी अध्ययन। 2020;15(3):112-128.
3. प्रसाद राजेश. ''भारत में सतत विकास लक्ष्यों के आंकड़ेः समीक्षा और विश्लेषण''. आर्थिक अवधारणा। 2019;25(1):78-95.
4. मिश्रा विवेक. ''सतत विकास लक्ष्यों की प्रासंगिकताः भारत का अनुभव''. आर्थिक अनुसंधान जर्नल। 2017;9(4):210-225.
5. यादव संजय. ''सतत विकास लक्ष्यों की भारतीय नीतियों में अंगीकृति''. भारतीय नीति अनुसंधान। 2021;17(2):55-70.

6. तिवारी अनिल. ''सतत विकास लक्ष्यों का भारतीय समाज में प्रभावः एक अध्ययन''. सामाजिक अनुसंधान। 2018;14(3):132-147.
7. गोयल प्रीति. ''सतत विकास लक्ष्यों के साकार करने के लिए भारत की नीतियों का मूल्यांकन''. भारतीय नीति अनुसंधान। 2019;16(1):28-42.
8. राय अशोक. ''सतत विकास लक्ष्यों के लिए भारतीय अर्थव्यवस्था का पुनरावलोकन''. अर्थव्यवस्था एवं विकास। 2020;11(2):75-89.
9. गुप्ता अमित. ''सतत विकास लक्ष्यों की भारतीय सरकार की नीतियों का पुनरावलोकन''. राजनीतिक विज्ञान अनुसंधान पत्रिका। 2018;21(3):102-118.
10. शुक्ला राजेश. ''सतत विकास लक्ष्यों की भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव का मूल्यांकन''. अर्थव्यवस्था एवं समाज। 2019;13(4):185-200.